।। वेदान्त पीयूष ।।

मुख्य पृष्ठ | उपदेश सार | उपासना | सामान्य | मिशन समाचार

Postal Regd No : IDC/MP/966/2006-08 Indore   मूल्य - रु १०/-, वर्ष -६ अंक-७३

आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६   फरवरी-२००८

अविद्यास्तीत्यविद्यायाम् एवासित्वा प्रकल्प्यते। ब्रह्मदृष्ट्या त्वविद्येयं न कथंचन विद्यते।।

अविद्या में बैठकर ही अविद्या की कल्पना की जा सकती है। ब्रह्मदृष्टि से तो अविद्या तीनों काल में नहीं है।

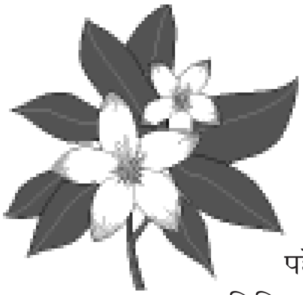

अवस्थात्रय विवेक

जीवन के सत्य को समझने के लिए उसके बारे में समग्रता से विचार करना होगा। हमारे प्रत्यक्ष जीवन की अनुभूत अवस्था तो जाग्रत ही होती है। इसके अलावा अन्य दो अवस्थाएं होती है, जिसकी तरफ हम अपना ध्यान कर ही केन्द्रित करते है। वह है स्वप्न और सुषुप्ति। हमारी समस्त अनुभतियां इन्हीं तीन के अन्तर्गत होती हैं। इन तीनों अवस्था का अनुभव करने वाला एक ही 'मैं' तीनों अवथाओं में विद्यमान रहता है, अतः वह तीनों अनुभूतियों को जाग्रत में आकर स्मरण कर पाता है। किन्तु इन तीनों अवस्थाओं में 'मैं' होने पर भी उस 'मैं' का एक पहेलू होता है जो एक अवस्था से अन्य अवस्था में जाने पर परिवर्तित हो जाता है। अतः यह बात निश्चित है कि यह हमारी वास्तविकता नहीं हो सकती है।

यह एक सिद्धान्त है कि किसी भी वस्तु के मूल स्वरूप में कभी भी किसी भी देश, काल अथवा परिस्थिति में कुछ भी परिवर्तन नहीं होता। जैसो अग्नि का स्वरूप उष्णता है तो वह सभी देश व काल में गरम ही रहेगी। अग्नि किसी भी देश, काल व परिस्थिति में अपनी उष्णता का त्याग नहीं सकती। उसी प्रकार हमारी वास्तविकता का वह पहेलू जो परिवर्तन को प्राप्त नहीं वह ही सत्य होना चाहिए। जाग्रत अवस्था में हम अपने स्थूल शरीर के प्रति सभान होते हैं। इसमें स्थित इन्द्रियों के माध्यम से बाह्य विषयों को ग्रहण करते हैं। स्वप्न अवस्था में इस स्थूल शरीर के साथ तादात्म्य छूट जाता है। स्वप्न में अपने ही मन के द्वारा अतृप्त तीव्र वासनाओं के बल से एक स्वप्न जगत का सृजन करते हैं। इसमें के एक काल्पनिक शरीर में आत्मबुद्धि (तादात्म्य) कर लेते हैं। जिसकी वजह से मैं और यह रूप (मन के द्वारा कल्पित) जगत का अनुभव होने लगता है। इन जाग्रत और स्वप्न अवस्थाओं में द्वैत जगत का ग्रहण होता है। इनसे विलक्षण एक तीसरी अवस्था होती है - जिसे सुषुप्ति की तरह से जाना जाता है। इस अवस्था में कुछ भी ग्रहण नहीं होता है, न देश और न ही काल। जहां मैं विषयक वृत्ति का भी अभाव है तथा मैं के द्वारा ग्रहणकृत विषयों का भी। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि 'मैं' का सदन्तर अभाव है। क्योंकि जगने के उपरान्त अपनी इस अनुभूति का हम स्मरण करते हैं कि 'हम सुखपूर्वक सोए थे, हमने कुछ नहीं जाना'। एवं हमारा कभी भी अभाव नहीं होता।

अतः अपने बारे में इस पहलू पर विचार की आवश्यकता है कि वह हम क्या है, जो सब के ग्रहण रूप जाग्रत और स्वप्न दो भी जानता है, तथा एक समान रहते हुए प्रकाशित करता है तथा वह ही गहरी निद्रा के समस्त अग्रहण रूप अवस्था को भी प्रकाशित करता है। हम जाग्रदादि तीनों में जो अनुभूत हो रहे हैं वह नहीं किन्तु समस्त अनुभव के प्रकाशक, अविकारी चेतन सत्ता होने चाहिए। इन अवस्थाओं पर गहराई पूर्वक विचार करके इस तथ्य का निश्चय करना चाहिए।

भगवान राम का दर्शन है - जाचक सकल अजाचक कीन्हें। श्री राम को लगता है कि मेरे सामने अगर किसी को फिर से मांगने आना पड़ा तो देने की सार्थकता ही क्या है? एक बार ऐसा दिया जाय कि दुबारा देने की आवश्यकता ही न रहे। इसके विपरीत यदि संसार का कोई दानी सोचता है कि बार-बार दो, थोड़ा-थोड़ा दो, जिससे याचक बार-बार धन्यवाद दे, बार-बार सिर झुकाये। एक ही बार दे दिया और लेने वाला पाकर हम को भूल गया तो देने का मतलब क्या रहा? इस प्रकार की सोच के पीछे धर्म का पालन गौण है। किन्तु प्रधानता स्वयं के पुण्यलाभ तथा अहंकार की संतुष्टि की हुआ करती है। यह धार्मिक-कृत्य नहीं किन्तु स्वार्थ सिद्धि का ही हेतु बनता है। यदि दान से सच्चा आध्यात्मिक लाभ लेना हो तो याचक के हित के प्रति संवेदनशील रहते हुए अहंकार को किनारे करके दान देना चाहिए।

तृष्णा के समान कोई दुःख नहीं होता।

वेदान्त आश्रम, E / 2948-50, सुदामा नगर, इन्दौर - 452 009

पिछले श्लोक में महर्षिजी ने बताया कि दृश्य पदार्थों का मिथ्यात्व जानकर दृश्य से चित्त को परावृत्त कर देने पर अपने दृष्ट्त्व का भी बाध होता है, इसी से अपनी चित् स्वरूपता में जागृति होती है। चित् स्वरूपता में जग जाना ही तत्त्व का दर्शन है। इसे जानना मन के उपर विचार करने से ही होता है। इसे महर्षिजी अगले श्लोक में दिखाते हैं।

मानसं तु किं मार्गणे कृते।
नैव मानसं मार्ग आर्जवात्।। (17)

यह मन क्या है? इस प्रकार विचार करने पर यह बात ज्ञात होती है कि मन नाम की किसी वस्तु की कोई स्वतंत्र सत्ता ही नहीं है। इस प्रकार विचार का मार्ग ही सरल मार्ग है। अर्थात् यह ही वह मार्ग है जो सीधे मुक्ति के प्रासाद में पहुंचाता है।

उपदेश सार

प्रत्येक जीव स्वरूपतः मुक्त ही है अर्थात् आत्मा सदैव मुक्त है, आत्मा में न किसी प्रकार का अज्ञान है अतः न किसी प्रकार का बन्धन तथा तज्जनित संसार, समस्या केवल मन की ही है। अपनी अवस्थाओं पर विचार करने पर भी यह बात ज्ञात होती है कि सुषुप्ति अवस्था में जहां मन लय को प्राप्त हो जाता है, तब किसी प्रकार का संसार व बन्धन नहीं होता है। किन्तु जिस समय जाग्रत में आते हैं, तो मन का भान होता है, तब ही समस्त संसार रूप बन्धन की अनुभूति हुआ करती है।

उपनिषद् में बताया भी है कि 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।' मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष के लिए कारण है। अतः यह विचारणीय है कि यह मन क्या है? कहां से आया है? मन में अनुभूत बन्धन का स्वरूप क्या है? इत्यादि। मन अर्थात् जिसमें 'मैं' वृत्ति से आरम्भ करते हुए समस्त बन्धन का अनुभव हो रहा है। जिस समय इस मन के बारे में विचार किया जाता है कि आखिर यह मन क्या है? तो यह ही निष्कर्ष निकलता है कि मन नाम की किसी वस्तु की कोई स्वतंत्र सत्ता ही नहीं है।

इस मन पर विचार करने के लिए आवश्यक है कि मन शान्त व विरक्त हो। इसमें विचार करने का सामर्थ्य होना चाहिए। इसके लिए पहले मन को कर्मयोग और उपासना के माध्यम से शान्त, निर्मल व सात्विक बनाया जाता है। तत्पश्चात् इसे तत्त्वचिन्तन में लगाया जाता है। उस समय यह विचार का विषय नहीं है कि मन शान्त कैसे हो? मन के दोषों को निवृत्त कैसे किया जाय? परन्तु अब विचार का विषय यह होता है कि इन सबके पीछे क्या कारण है? उस कारण की निवृत्ति की दिशा में ही पुरुषार्थ लगाया जाता है, एवं मन के बारे में गहराई पूर्वक विचार करने पर मन रहता ही नहीं है। मन के बारे में विचार ही हमें सीधे मुक्ति के प्रासाद में प्रवेश दिलाती है।

भगवान विष्णु का क्षीरसागर में निवास है, वे शेषशय्या पर योगनिद्रा में स्थित हैं तथा क्षीरसागर लक्ष्मीजी का उद्गम स्थान है और लक्ष्मीजी भगवान की चरणसेवा करती है। यह एक प्रतीकात्मक विग्रह है।

क्षीरसागर सात्विक मन का प्रतीक है। सात्विक मन में ही दैवी सम्पत्ति रूपा लक्ष्मीजी का वास होता है। परमात्मा के साक्षात्कार के लिए जिस मन को शास्त्रों के द्वारा पात्र बताया जाता है, वह मन में शमादि दैवी सम्पत्ति परं आवश्यक है। जो मन ऐसे सुन्दर सम्पदाओं से युक्त है, ऐसे शुद्ध सात्विक मन में ही परमात्मा का साक्षात्कार हो सकता है। जिस अन्तःकरण में परमात्मा का साक्षात्कार हो गया है, ऐसा ज्ञानवान विषय रूप सर्प से युक्त इस जगत में विचरण करें तो भी उसके विष से अप्रभावित रहता है। इतना ही नहीं विषय सभर जगत के मध्य में भी अपने स्वस्वरूप में रमना सहज हो जाता है, कि जैसे भगवान विष्णु शेषशय्या पर भी योगनिद्रा में स्थित है। लक्ष्मीजी न केवल शमादि सम्पत्ति रूपा है किन्तु समस्त लौकिक सिद्धि को भी संकेत करता है। ज्ञानवान के लिए लौकिक सिद्धियां मानों उनकी सेवा में सदैव तत्पर रहती हैं। ऐसे भगवान विष्णु का क्षीरसागर में वास परं अवस्था में जगने हेतु साध्य-साधन के विवेक का भी द्योतक है।

त्याग के समान कोई सुख नहीं होता।

संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।।

हे *हनुमानजी! आपका स्मरण करने से सभी संकट कट जाते हैं और सब पीडाएं मिट़ जाती हैं।*

हनुमानजी के स्मरण मात्र से मनुष्य के समस्त कष्ट और पीडाएं समाप्त हो जाती हैं। यहां यह विचारणीय है कि संकट और पीड़ा क्या होती है? जीवन में सदैव सुख-दुख, मान-अपमान आदि द्वन्द्वों की प्राप्ति होनी स्वाभाविक ही है। ये द्वन्द्व किसी समय अनुकुल बन जाते हैं, तो किसी समय प्रतिकुल। यह अनुकुलता और प्रतिकुलता सदैव व्यक्ति सापेक्ष होती है। अर्थात् व्यक्तिगत रागात्मक एवं द्वेषात्मक अपेक्षा के अनुरूप होती है। जो भी परिस्थिति अपेक्षा के प्रतिकूल होती है वह हमारे लिए संकट बन जाती है। संकट वह होता है कि जब जीवन में कोई भी संकल्प किया है, उन संकल्प की पूर्ति में अनेकों कठिन परिस्थितियां चुनौति रूप बन जाती हैं, जब उन चुनौतियों का सामना करने के प्रति अपने आपको असमर्थ पाते हैं, तो वह परिस्थिति संकट रूपा बन जाती है। यह संकट जिस समय हमारे लिए ज्यादा गहराता है, तो वह न केवल मानसिक किन्तु शारीरिक रोग रूप पीड़ाओं का कारण बन जाता है।

हनुमान चालीसा

हनुमानजी का स्मरण एक निरपेक्ष भाव से युक्त होकर प्रभु ऐसे व्यक्तित्व का समरण है, जो सेवा में समर्पित है। जो स्वार्थरहित होने के कारण विवेकशील है। अतः कोई भी परिस्थिति को वे प्रभु का प्रसाद मात्र देखते हैं तथा इस परिस्थिति का सब से अच्छा प्रयोग कर कैसे धर्ममय तरीके से प्रभु की आज्ञा का पालन हो यह ही मात्र विचार का विषय रहता है। प्रभु की सेवा रूप संकल्प में प्राप्त चुनौतियों का प्रभु के प्रति श्रद्धा से युक्त होकर बहुत धैर्य तथा उत्साह के साथ सामना करने का सामर्थ्य रखते हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व का परिचय उनके जीवन की समस्त लीलाओं के माध्यम से प्राप्त होता है।

उपासना का सिद्धान्त है कि जिनकी भी उपसना की जाय वह गुण मन में अपनी गहरी छाप छोड़ देता है। तथा जिस विषयक ध्यान व स्मरण होता है वह ही मन मंदिर में एक आदर्श रूप से स्थापित होने लगता है। वैसा मन भी बनता जाता है। हनुमानजी के व्यक्तित्व का स्मरण मन को यह ही संस्कारों से प्रभावित करता है कि जिससे व्यक्तिगत अपेक्षाओं का त्याग हो जाए। प्रभु के हाथों में निमित्त बनकर प्राप्त परिस्थिति में अपने आपको समग्रता से समर्पित कर पाएं। परिस्थिति में निरपेक्ष होकर जीवन की कैसी भी चुनौतियां का बल एवं उत्साहपूर्वक सामना कर सकें। इसी वजह से मन में एक अद्भुत निश्चिंतता आ जाती है। मन के तनाव समाप्त होने लगते हैं, जिसके फलस्वरूप समस्त तनाव जनित रोग एवं तद् जनित पीड़ाएं दूर होने लगती हैं।

समस्त प्रकृति सतत यज्ञ कर रही है। वृक्ष, लता, तृण आदि यज्ञ कर रहे हैं। अपने फूल-फल, पत्ते, छाल-छाल, गोंद-रस, काष्ठ-जड़, अंकुर, छाया, बीत तथा अपनी समस्त भस्म तक से दूसरों की भलाई कर रहे हैं। वृक्षों के द्वारा यह जो स्वयं लोककल्याण हो रहा है वह यज्ञ है। वृक्ष यज्ञ में स्थित है। पृथिवी जो एक बीज को पचास बनाकर लौटाती है, यह पृथिवी का यज्ञ है। दान, आदान, उत्सर्ग सब यज्ञ ही है। दूसरों को कुछ देना, दूसरों से कुछ लेना, जीवन को नियमित बनाना, श्रुत्यर्थ की शिक्षा देना, अन्य को प्रसन्न करना यज्ञ है। जल का रस देना, सूर्य का प्रकाश देना, वायु का प्राण देना, आकाश का सब को धारण करना, यह सब यज्ञ है। विराट् विश्व इस प्रकार सतत यज्ञ कर रहा है।

हम जीवन में अतिशय संग्रह को त्याग कर लेने के बजाय देना सीखे। अपने पास जो भी है, उसे त्याग कर वितरण की पद्धति सिखलाना यज्ञ का काम है। मनुष्य के उपार्जन में पशु पक्षी, पृथिवी जलादि सब का भाग होता है। अतः पुष्प, चन्दन जो पृथिवी का भाग है, इनसे पृथिवी की पूजा होती है। जल का भाग है दूध, अतः दूध से जल की पूजा होती है। आहूति देकर अग्नि की पूजा होती है। जीवन में समष्टि से बहुत सी वस्तुएं ग्रहण करते हैं। ऐसे ही उसे देना यज्ञ है। जिस जीवन में यज्ञ नहीं है वह जीवन मलिन है। यदि अपने पास अन्न है, तो अन्नदान करो। जल है तो जलदान करो। धन है तो धन का, विद्या है तो विद्या का, जो है उसी के माध्यम से सबकी सेवा करो। ईश्वर ने तुम्हें जो सामग्री दी है, उसी के द्वारा सेवा करोगे तब यज्ञ होगा। सेवा वस्तु के द्वारा, कर्म के द्वारा, वाणी द्वारा, भाव द्वारा, बुद्धि द्वारा, होती है। अपने अहंकार व आग्रह को त्याग देना भी सेवा है। अपने भोग और आनन्द का त्याग करके सेवा करना यह यज्ञ है। जो यज्ञभाव से युक्त होकर कर्म करता है वह ही कर्म के दोषों से मुक्त हो पाता है। अन्ततः मन की शुद्धि रूपी सिद्धि को प्राप्त करता है। ऐसे मन से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मिशन समाचार

वेदान्त आश्रम, इन्दौर :- वेदान्त आश्रम, इन्दौर में प्रतिदिन पूज्य गुरुजी के द्वारा प्रातः ७.०० बजे से श्री हनुमान चालीसा पर प्रवचन चल रहे हैं। प्रातः ६.०० और सायं ७.०० बजे भगवान श्री गंगेश्वर महादेवजी की आरती होती है। सायं आरती के बाद भजन का कार्यक्रम होता है। इसके अलावा वेदान्त आश्रम गुरुकुल में एक रशियन महिला विद्यार्थी के लिए अंग्रेजी भाषा में वेदान्त का कार्स आरम्भ हुआ है। जिसमें पूज्य गुरुजी द्वारा 'वेदान्त सार' ग्रंथ का अध्ययन कराया जाता है, उसके अलावा गीता, ध्यान, संस्कृत तथा स्तोत्र-पाठ भी सिखाया जा रहा है।

नए वर्ष के शुभारम्भ में वेदान्त आश्रम के समस्त अन्तेवासी महात्माओं के आशीर्वचन से अनुगृहीत हुए। ५ जनवरी को ऋषीकेश में स्थित आर्ष विद्या पीठम् के संस्थापक तथा आचार्य महासभा के अध्यक्ष स्वामी श्री दयानंद सरस्वतीजी ने अन्य महात्माओं के साथ वेदान्त आश्रम में पधारकर समस्त भक्तों तथा महात्माओं को अनुगृहीत किया।

इन्दौर के फूटी कोठी विस्तार में स्थित अग्रसेन धाम में गीता जयन्ति महोत्सव का आयोजन १८ से २४ दिसम्बर तक हुआ। इस आयोजन का शुभारम्भ पूज्य गुरुजी के करकमलों से दीप प्रज्ज्वलित करके आर्शीवाद प्रदान करने के द्वारा हुआ। तत्पश्चात् पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी ने भी प्रवचन किया। इस सात दिवसीय प्रवचन माला के अन्तर्गत पू. स्वामिनी समतानन्दजी के भी प्रवचन हुए। गीता जयन्ति को पुनः पूज्य गुरुजी द्वारा प्रवचन हुआ।

वेदान्त मिशन, मुम्बई :- वेदान्त मिशन, मुम्बई द्वारा पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी के प्रवचन का आयोजन १६ से २४ दिसम्बर तक लिन्कींग रोड, खार स्थित नेशनल कोलेज में किया गया। इस ज्ञान यज्ञ के सायं कालीन सत्र में पूज्य स्वामिनीजी ने गीत के पन्द्रहवें अध्याय पुरुषोत्तम योग पर प्रवचन किए। प्रातः के सत्र में हस्तामलकाचार्य द्वारा विरचित हस्तामलक स्तोत्रम् पर प्रवचन किए गए। १६ दिसम्बर को वेदान्त मिशन की आफिस के हाल में पूज्य स्वामिनीजी की सन्निधि में गीता के चुनिन्दा अध्यायों का पाठ़ हुआ। उसके बाद गीता से जीवन शिक्षा पर समस्त जिज्ञासुओं द्वारा वक्तव्य दिया गया। २२ दिसम्बर को जुहू स्थित वल्लभनिधि हवेली मन्दिर में पू. स्वामिनीजी के एक दिवसीय प्रवचन का आयोजन हुआ। इस कार्यघ्म में पू. स्वामिनीजी ने 'भक्ति से तनावमुक्ति' विषय पर प्रवचन किया।

वेदान्त मिशन के आफिस पर प्रति रविवार को स्वाध्याय मण्डल में ६.३० से ८.०० बजे तक पूज्य गुरुजी के मुण्डक उपनिषद् के प्रथम अध्याय के द्वितीय खण्ड पर विड़ियो प्रवचन चला कर उस पर परिचर्चा होती है।

वेदान्त मिशन, अहमदाबाद :- वेदान्त मिशन, अहमदाबाद द्वारा आयोजित पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी का ६ जनवरी से १२ जनवरी तक का 'गीता ज्ञान यज्ञ' का कार्यक्रम रामकृष्ण केन्द्र में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के प्रातः के सत्र में पू. स्वामिनीजी ने माण्डूक्य उपनिषद् के आगम प्रकरण पर तथा सायं के सत्र में गीता के छठे़ अध्याय ध्यान योग पर व्याख्या करी।

१३ जनवरी को अहमदाबाद स्थित बाज खेड़ावाल ब्राह्मण समाज के वयोवृद्ध महानुभावों के सम्मान का कार्यक्रम कांकरिया स्थित प्राणशंकर भाई हॉल में हुआ। उस कार्यक्रम में पूज्य स्वामिनीजी ने उन महानुभावों को तनावमुक्त जीवन जीने का उपाय बताते हुआ आशीर्वचन प्रदान किया तथा उन्हें शाल एवं सम्मानपत्र देकर सम्मानित किया।

—: शुभ कामनाओं सहित :—

1. Sh. P.H. Shah, Ahmedabad
2. M/S Punit Apparels Pvt. Ltd., Indore
3. M/S Samarpan Engg. & Mkt. Pvt. Ltd., Indore
4. Sh. Chandru Kukreja, Mumbai
5. M/S Pall Pharmalab Filtration Pvt. Ltd., Mumbai
6. M/S Elite Housing Developement Pvt. Ltd., Mumbai

-: वेदान्त पीयूष :-
स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती के लिये, तुलिका प्रिन्टिंग मन्दिर, ३४ ए ग्रीनलेण्ड कॉलोनी, स्नेहनगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 'वेदान्त आश्रम', ई-२६४८.५० सुदामा नगर, इन्दौर से प्रकाशित।
सम्पादक :- स्वामिनि अमितानन्द सरस्वती Tel : 0731-2486055, 9302107229 ; E mail- info@vmission.org
आर.एन.आई. पंजीकरण संख्या - एम.पी/हिन्दी/२०००/१०६०६